मूलशान्ति विधि

●

श्रीधर शास्त्री

मंत्री

पण्डित - परिषद्, प्रयाग

⊙

संवत् : २०४८ भारती परिषद् • प्रयाग मूल्य : ४ रुपया

●

श्रीधर शास्त्री
मंत्री, पण्डित-परिषद्, प्रयाग

●

भारती-परिषद्, प्रयाग
इलाहाबाद—३

●

देश सेवा प्रेस, प्रयाग

●

२०४८ : १९९१

●

स्वर्गीय पिताश्री
पण्डित दीनबन्धु मिश्र
की पुण्य स्मृति

एक प्रयास

मूलशान्ति विधि आपके सामने है, यह प्रयास भी उसी क्रम में एक है, जिसमें वेदीपूजन ...ष्ठी हवन पद्धति—ग्रह शान्ति), एकोद्दिष्टि और सपिण्डन श्राद्ध पद्धति, वार्षिक श्राद्ध, पार्वण श्राद्ध विधि, त्रयो... संस्कार, विवाह-संस्कार, उपनयन-संस्कार आदि पद्धतियाँ प्रकाशित हैं। वृषोत्सर्ग विधि, श्रीमद्भागवत सप्ताह पूजन ... आदि विधियाँ भी प्रकाशनार्थ तैयार हैं।

इस पुस्तक में यह यत्न किया है, कि सामान्य पण्डित भी यथाविधि मूलशान्ति करा सकें। कहीं कोई कठिनाई-अड़चन नहीं हो, फिर भी एक व्यक्ति का प्रयत्न है, यदि कहीं कोई त्रुटि या कमी महसूस हो, तो कृपापूर्वक सूचित करने का कष्ट स्वीकार करेंगे, जिससे भविष्य में सुधार किया जा सके।

विश्वास है, सामान्य पण्डित-पुरोहितों के लिए यह पद्धति उपयोगी सिद्ध होगी।

श्रीधर शास्त्री
मंत्री, पण्डित-परिषद, प्रयाग

बहादुरगंज, इलाहाबाद-३
शिवरात्रि : २०४४-१९

मूल शान्ति सामग्री

१ काठ की चौकी १ हाथ लम्बी चौड़ी
१ बाँस की छड़ी २। हाथ लम्बी
१ सोने की प्रतिमा
१ ताँबे की लोटिया
१ ताँबे की कटोरी लोटिया के मुँह ढकने के लिए
१ तांबे की छोटी कटोरी प्रतिमा रखाने के लिए
१ लोटा वरण के लिए
१ धोती वरण के लिए
१ अँगौछा वरण के लिए
१ माला वरण के लिए
१ आसन वरण के लिए
२ जोड़ा जनेऊ
सफेद कपड़ा १ गज चौकी पर बिछाने के लिए
लाल टून १ गज चौकी पर चँदवा बाँधने के लिए
रेशमी कपड़ा लाल या पीला १ बीता प्रतिमा के नीचे बिछाने के लिए

रोड़ी २५ पैसे की
सूखी पीसी हल्दी १० पैसे की
अबीर बुक्का १० पैसे का
नवग्रह का रंग १० पैसे का
सिन्दूर मोटिया १० पैसे का
दशांग हवन सामग्री २ पैकेट
धूप बत्ती १ पैकेट
कपूर २५ पैसे का
रुई पाँच पैसे की
पान २५
सुपारी २५
फूलमाला ७
छुट्टा फूल ५० पैसे का
तुलसी
कलाई नारा २५ पैसे का
चंदन घिसा हुआ

□

हवन के लिए सामग्री

कड़ू तेल १ पाव
पंचमेवा १ छँटाक
सूखा नारियल १
फल चढ़ाने को ५
बताशा १ पाव
घी १ पाव
करई कुल्हड़ ७
पियाला १५
पत्तल ५
दही १ छटांक
काली उर्द १ छटांक
चावल अक्षत १ पाव
आटा चौक पूरने को १ छटांक
सप्तधान्य सब मिलाकर २ छटांक
(गेहूँ-जवा-चना-मूंग-सांवा-ककुनी-तिल)
जवा पियाला में भरने को १ पाव

जवा २॥ पाव
शहद चार आने का
चावल १ पाव
तिल ३ छटांक
शक्कर १ छटांक
पंचमेवा ५० पैसे का
आम की लकड़ी २॥ किलो
गंगा मिट्टी वेदी के लिए
गंगाजल
आम की पत्ती
गोबर
नवग्रह की लकडी १-१ बीता
(मदार-पीपल-छिऊल-कुशा-चिचड़ी-गूलर-शमी-दूब)
केला का पत्ता ५
सात स्थान की मिट्टी १-१ मुट्ठी
(हाथी-घोडा-गौ के नीचे की-विमौर-तालाब-रथ-चौराहा की) अथवा—सब के अभाव में संगम की मिट्टी

□

स्नान के लिए सामग्री

१ घड़ा २७ छेद का
मिट्टी २७ घाट की या गंगाजी की
पानी २७ घाट की या गंगाजल
पत्ती २७ पेड़ की
पंचरत्नी (सोना-चाँदी-तांबा-पीतल-मूंगा या कांसा १-१ टुकड़ा)
औषधि—दस—१-१ टुकड़ा
(कूट-जटामासी-हरदी-मुर्रा-दारूहरदी-शिलाजीत
चंदन-वच-चम्पक-नागर मोथा)
अथवा केवल 'सतावर' ले लें

● ●

पंचामृत प्रसाद के लिए
१ कटोरी कांस की छायादान के लिए
(कड़ू तेल भर कर)

□

मूलनक्षत्र

गण्ड मूल — (१) अश्लेषा (२) मघा (३) ज्येष्ठा (४) मूल—ये ४ नक्षत्र गण्ड मूल कहलाते हैं।

मलिन मूल — (१) अश्विनी (२) रेवती—ये दो नक्षत्र मलिन मूल अर्थात् मूल के मैल कहे जाते हैं।

अभुक्त मूल — ज्येष्ठानक्षत्र के अन्त की ४ घड़ी तथा मूलनक्षत्र के आदि की ४ घड़ी—को अभुक्त मूल कहते हैं।

कुछ महर्षि — ज्येष्ठा नक्षत्र की अंतवाली आधी घड़ी तथा मूल के आदि की आधी घड़ी को अभुक्त मूल कहते हैं।

एक ऋषि के मत से — ज्येष्ठा की अन्तिम १ घड़ी तथा मूल के आदि की १ घड़ी को अभुक्त मूल कहा गया है।

- इस प्रकार अभुक्त मूल के समय के सम्बन्ध में कई मत हैं, लेकिन—
- अभुक्तमूल में उत्पन्न बालक के परित्याग कर देने की बात भी शास्त्रकारों ने लिखी है।

अथवा
- विशेष शान्ति करने का प्रावधान बताया है।
- अभुक्त मूल में उत्पन्न बालक ८ वर्ष में पिता को कष्ट देता है—यह शास्त्रों का मत है।

मूलनक्षत्र जन्मफल

● जिस नक्षत्र के जिस चरण में जन्म हो—उसका सामान्य फल इस प्रकार है :—

नक्षत्र	प्रथमचरण	द्वितीयचरण	तृतीयचरण	चतुर्थचरण
१. अश्लेषा	शान्ति से सुख	धननाश	माता को कष्ट	पिता को कष्ट
२. मघा	मातृपक्ष को कष्ट	पितृवंश को कष्ट	सुखैश्वर्य	धन विद्यालाभ
३. ज्येष्ठा	ज्येष्ठभ्राता को कष्ट	अनुज को कष्ट	माता को कष्ट	स्वक्षति
४. मूल	पिता को कष्ट	माता को कष्ट	धननाश	शान्ति से सुख
५. रेवती	शान्ति से शुभ	मंत्रीतुल्य	सुखसम्पत्ति	अनेक कष्ट
६. अश्विनी	पिता को भय	सुखैश्वर्य	मंत्रीतुल्य	नृप समान

मूलनक्षत्र फल—

विभिन्नमत ● मूल नक्षत्र के फल के सम्बन्ध में अनेक मत हैं।

(क) संक्रान्तिमास के अनुसार—मूल का वास तथा उसका फल इस प्रकार है :—

संक्रान्ति	वृष–सिंह-वृश्चिक-कुम्भ	मेष–धन–कर्क–मकर	मिथुन–तुला–कन्या–मीन
मूलवास	स्वर्ग में	भूमि में	पाताल में
फल	सुखैश्वर्य	अशुभ	धनलाभ

(ख) चन्द्रमास के अनुसार मूल का वास तथा उसका फल इस प्रकार है :—

- ☐ मास — बैशाख-ज्येष्ठ-अग्रहण-फाल्गुन— पाताल में वास — फल शुभ।
- ☐ मास — चैत-अषाण-कार्त्तिक-पौष — भूमि में वास — फल अशुभ।
- ☐ मास — अषाढ़-अश्विन-माघ-भाद्रपद — स्वर्ग में वास — फल शुभ।

(ग) तिथि और दिन के हिसाब से :—

☐ तृतीया-षष्ठी-दशमी तथा शुक्ला चतुर्दशी को शनि और मंगल दिन रहे—मूल नक्षत्र हो—तो यह मूल महाकष्ट देने वाला होता है।

मूलवृक्ष : मूलपुरुष

☐ मूलनक्षत्र का सूक्ष्मफल मूलवृक्ष अथवा मूल पुरुष चक्र बनाकर भी देखा जाता है। अश्लेषा-ज्येष्ठा तथा मूल—तीनों नक्षत्रों का फल अलग-अलग है। नीचे क्रमशः इसे दिया जा रहा है।

(क) मूल नक्षत्र का वृक्ष—मूल नक्षत्र का मान ६० घड़ी स्थिर कर उसे निम्न प्रकार से बांटे तथा फल देखो—

१ से	४	घड़ी तक — जड़ भाग	— फल	— विनाश
५ से	२१	घड़ी तक — स्तम्भ भाग	— फल	— हानि
१२ से	२१	घड़ी तक — त्वचा भाग	— फल	— भाई को क्षति
२२ से	२६	घड़ी तक — शाखा	— फल	— माता को कष्ट
३० से	३८	घड़ी तक — पत्ता	— फल	— कुटुम्ब को अशुभ
३६ से	४३	घड़ी तक — फूल	— फल	— नृपप्रिय
४४ से	४६	घड़ी तक — फल	— फल	— नृपतुल्य
५० से	६०	घड़ी तक — शिखा	— फल	—अल्पायु योग

(ख) ज्येष्ठा नक्षत्र—की ६० घड़ी को १० भाग में ६-६ घड़ी के हिसाब से बाँट दे, जिस भाग में जन्म हो उसका फल निम्नवत देखें—

पहली	६	घड़ी में — नानी को अशुभ
दूसरी	५	घड़ी में — नाना को अशुभ
तीसरी	६	घड़ी में — मामा को अशुभ
चौथी	६	घड़ी में — माता को अशुभ
पांचवी	६	घड़ी में — स्वयं बालक को अशुभ
छठीं	६	घड़ी में — कुटुम्ब को अशुभ
सातवी	६	घड़ी में — दोनों कुटुम्ब में अशुभ
आठवीं	६	घड़ी में — अग्रज को कष्ट
नवीं	६	घड़ी में — श्वसुर को भय
दसवीं	६	घड़ी में — सर्वस्व क्षति।

(ग) आश्लेषा नक्षत्र—की ६० घड़ी को भी ६-६ घड़ी के हिसाब से १० भाग में बाँट दे और १-१ भाग का फल इस प्रकार देखो—

१. राज्यप्राप्ति	२. पितृभय	३. मातृकष्ट	४. कामक्रियारति	५. पितृभक्ति
६. बली	७. आत्मघाती	८. त्यागी	९. भोगी	१०. धनी

मूलशान्ति का समय—

- गण्डमूल—अश्लेषा—मघा—ज्येष्ठा—मूल—इन चारों की शान्ति २७ दिन पर जिस नक्षत्र में जन्म हुआ है—उसी नक्षत्र के आने पर करनी चाहिए।
- रेवती और अश्विनी नक्षत्रों की शान्ति ११ व १२वें दिन बरही के दिन भी की जा सकती है।

मूल में बालक उत्पन्न होने पर

- लोकाचार में दाढ़ी-बाल भी नहीं बनवाया जाता है। ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करे।
- जिस नक्षत्र में जन्म हो—उसके मंत्र का २७ हजार जप कराना चाहिए।

मूलशान्ति प्रक्रिया

(१) (क) ० रेवती-अश्विनी नक्षत्र में जन्म होने पर—
११ वें १२वें दिन (बरही के दिन) उत्पन्न शिशु तथा उसकी माता के स्नान आदि कर लेने पर शिशु का पिता शिशु तथा शिशु-माता को साथ बिठाकर—
गौरी-गणेश-कलश-नवग्रह-षोडशमातृका—का पूजन कर छायादान करे। गोदान-ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए।

(ख) ० आजकल मलिनमूल रेवती-अश्विनी में सत्यनारायण की कथा सुनकर छायादान कर देते हैं।

(२) ० अश्लेषा-ज्येष्ठा-मघा तथा मूल नक्षत्र में जन्म होने पर २७वें दिन उसी नक्षत्र में—
२७ छेद के घड़ा में—२७ पेड़ की पत्ती, २७ घाट का पानी—२७ घाट की मिट्टी पंचरत्नी—दशौषधि आदि छोड़कर माता-पिता तथा शिशु को स्नान करावे।

- ग्रहवेदीपूजन-हवन-छायादान-गोदान-ब्राह्मण भोजन आदि प्रक्रिया पूरी करे।
- शास्त्र के अनुसार "गोमुख प्रसव" का विधान है, लेकिन आजकल यह सामान्यतः नहीं होता है।

आजकल—मूलशान्ति की दो प्रक्रियाएँ प्रचलित हैं :—

(क) पहले स्नान आदि कर बाद में पूजन-हवन-छायादान आदि करते हैं।

(ख) द्वितीय प्रक्रिया में—पंचदेव पूजन तथा कुछ हवन करने के बाद दाढ़ी-बाल आदि बनवाकर स्नान करते हैं, और फिर बैठकर शेष पूजन-हवन-छायादान आदि कर्म पूर्ण करते हैं।

- शास्त्र के अनुसार—द्वितीय प्रक्रिया उचित है किन्तु देशाचार-लोकाचार के अनुसार कार्य करना चाहिए।
- शास्त्र मत के अनुसार पंचदेव पूजन—प्रधानदेव पूजन—हवन-छायादान विहित है।
- किन्तु लोकाचार में चारों वेदी का पूजन हुआ करता है।

इस पद्धति में

- प्रतिज्ञा संकल्प—२७ छिद्र घटस्नान विधि—मूलनक्षत्र देवता पूजन विधि छायादान की विधि लिखी गयी है।
- गौरी-गणपति-पूजन आदि वेदीपूजन पद्धति के अनुसार कराया जाय।

पूजन - प्रारम्भ

□□

□ शिशुपिता नित्यकर्म से निवृत्त होकर शुद्ध धोती-दुपट्टा धारण कर पूर्व-मुख बैठकर पूजन-प्रारम्भ करे।

□ कुशा या आम्रपल्लव से अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर जल छिड़के—मंत्र पढ़े—

ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

□ तीन बार आचमन करे—

ओम् नारायणाय नमः। ओम् केशवाय नमः। ओम् माधवाय नमः।

□ हाथ धोवे—

ओम् हृषीकेशाय नमः। पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

□ पवित्री (पैंती) पहने—निम्न मंत्र पढ़ता रहे—

ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत् गुनाम्यच् छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम।

☐ हाथ में अक्षत पुष्प लेकर स्वस्तिवाचन करे—

ओम् आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासो ऽअपरीता स उद्भिदः। देवा नो यथा सद मिद् वृधे असन्न प्रा युवो रक्षितारो दिवे दिवे। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम् देवानाꣳराति रभि नो निवर्त्तताम्। देवानाꣳसख्यमुपसे दिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे। तान् पूर्वया निविदाहू महे वयं भगं मित्रमदितिम् दक्ष मस्रिधम्। अर्यमणं अरुणꣳसोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्। तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना श्रृणुतन् धिष्ण्या युवम्। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियन् जिन्व मवसे हू महे वयम्। पूषानो यथा वेद सा मसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वतये। स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं या वानो विदथेषु जग्मयः। अग्नि जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह। भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम् देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरै रंगैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रा सो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषता युर्गन्तोः। अदिति द्यौ रदिति रन्तरिक्ष मदितिर्माता सपिता सपुत्रः। विश्वेदेवा अदितिः पंचजनाऽअदितिर्जात मदितिर्जनित्वम्। दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे सुप्रजास्त्वाय सहसा। अथोजीव शरदः शतम्। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि। यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः। पशुभ्यः।

ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरतानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव।
ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु।

☐ हाथ का अक्षत-पुष्प अपने सामने पृथिवी पर छोड़ दे।

☐ दूसरा अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करे—

ओम् सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नशतस्य न जायते॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्वविघ्नोपशान्तये॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥
श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। शची पुरन्दराभ्यां नमः। मातृ-पितृ चरण कमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्मो नमः। वास्तुदेवताभ्योनमः। स्थानदेवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥

☐ हाथ का अक्षत-पुष्प पृथिवी पर छोड़ दे ।

☐ कुशा-जल-अक्षत-पुष्प द्रव्य लेकर संकल्प करे—

हरिः ओम् तत् सत् विष्णुर्विष्णुःर्विष्णुः अद्य ओम् नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणोऽह् नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे-वैवस्वतमन्वन्तरे-अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक देशे पुण्यक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम संवत्सरे यथायनेसूर्ये यथात्रृतौ च महामांगल्यप्रदे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे यथानक्षत्रे यथाराशिस्थिते सूर्ये यथा-यथाराशि स्थितेषु शेषेषु ग्रहेषु सत्सु यथा-लग्नमुहूर्त योग करणान्वितायाम्-एवं ग्रहगुणविशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल-प्राप्तिकामः··················गोत्रः························नामाऽहम् ममगृहे············नक्षत्रे उत्पन्न-बालकस्य मूलनक्षत्रजन्य सकलारिष्ट परिहारार्थम्—मूल शान्तिम् करिष्ये। तदङ्गत्वेन निर्विघ्नता सिध्यर्थम् गणेशाम्बिकयोः पूजनं-कलशस्थापनं-ग्रहस्थापनं-पूजनं-मूलनक्षत्र देवतास्थापनं पूजनं हवनादिकं च करिष्ये ।

☐ संकल्प पढ़ कर हाथ का अक्षत-पुष्प-कुशा-द्रव्य पृथिवी पर छोड़ दे ।

पृथिवी पूजन

ओम् पृथिव्यै नमः

☐ यह कहते हुए तीन बार पृथिवी पर जल छोड़े तथा रोली-अक्षत-पुष्प छोड़ कर पृथिवी का पूजन करे ।

☐ इसके बाद—वेदी पूजन विधि के अनुसार—क्रमशः :—

☐ गौरी-गणेश-कलश की स्थापना करे
☐ गौरी-गणेश-पूजन
☐ कलश-पूजन
☐ षोडशमातृका पूजन तथा मातृका कलश पुजन
☐ वास्तुपीठ कलश तथा वास्तुपीठ देवता पूजन
☐ ६४ योगिनी कलश तथा ६४ योगिनी पूजन
☐ अग्निस्थापन
☐ नवग्रह वेदी कलश तथा ग्रहपूजन—करे
☐ इन सब वेदी पूजा हो जाने के बाद—
प्रधान पीठ की पूजा करे

टिप्पणी—कुछ लोग—पुण्याहवाचन—नान्दीश्राद्ध—सप्तमातृकापूजन-वसोर्धारा आदि कार्य भी करते-कराते हैं । देशाचार-कुलाचार के अनुसार करना चाहिए । पूजनविधि—वेदीपूजनविधि में लिखी है ।

प्रधान पीठ

☐ १ काठ की चौकी पर सफेद कपड़ा बिछाकर लाल रोड़ी या सूखी पीसी हल्दी से २४ दल का कमल बनाये ।

☐ चौकी के चारों पावा में ४ बांस की छड़ी तथा केला का पत्ता बांध कर मंडप बना दे ।

☐ चारों छड़ी में ऊपर लाल कपड़ा बांधकर चौकी के ऊपर चँदवा (चाँदनी) बांध दे ।

कमलदल पूजन

- ☐ पहले चौकी पर बने २४ कमल-दल पर अक्षत छिड़क कर २४ देवताओं का दिकपाल सहित आवाहन-पूजन करे,
- ☐ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ मे २-२ दाना अक्षत कमल-दल पर छिड़के—नाम मंत्र पढ़ता रहे —

अश्लेषा नक्षत्र में

१. ओम् भूर्भुवः स्वः भगाय नमः - भगम् - आवाहयामि
२. ओम् भूर्भुवः स्वः अर्यमणे नमः - अर्यमणम् - आवाहयामि
३. ओम् भूर्भुवः स्वः सवित्रे नमः - सवितारम् - आवाहयामि
४. ओम् भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः - विश्वकर्माणम् - आत्राहयामि
५. ओम् भूर्भुवः स्वः वायवे नमः - वायम् - आवाहयामि
६. ओम् भूर्भुवः स्वः इन्द्राग्नीभ्यां नमः - इन्द्राग्न्योः - आवाहयामि
७. ओम् भूर्भुवः स्वः मित्राय नमः - मित्रम् - आवाहवामि

टिप्पणी—
- ☐ मूल के ६ नक्षत्र हैं, छहों नक्षत्रों के अलग-अलग देवता हैं।
- ☐ कमलदल पर छहों के अलग-अलग क्रम से आवाहन होता है।
- ☐ जिस नक्षत्र में जन्म हो उसी नक्षत्र के देवताओं का कमलदल तथा स्वर्णप्रतिमा पर आवाहन-पूजन करना चाहिए।
- ☐ छहों नक्षत्रों के देवताओं का नाम क्रमानुसार यहाँ दिया गया है, ध्यान से देख लें।

८. ओम् भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः - इन्द्रम् - आवाहयामि
९. ओम् भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः - निर्ऋतिम् - आवाहयामि
१०. ओम् भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः - अपः - आवाहयामि
११. ओम् भूर्भुवः स्वः विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः - विश्वान् देवान् - आवाहयामि
१२. ओम् भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः - विष्णुम् - आवाहयामि
१३. ओम् भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः - अष्टवसून् - आवाहयामि
१४. ओम् भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः - वरुणम् - आवाहयामि
१५. ओम् भूर्भुवः स्वः अजैकपदे नमः - अजैकपादम् - आवाहयामि
१६. ओम् भूर्भुवः स्वः अहिर्बुध्न्याय नमः - अहिर्बुध्न्यम् - आवाहयामि
१७. ओम् भूर्भुवः स्वः पूष्णे नमः - पूषाणम् - आवाहयामि
१८. ओम् भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः - अश्विनौ - आवाहयामि
१९. ओम् भूर्भुवः स्वः यमाय नमः - यमम् - आवाहयामि
२०. ओम् भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः - अग्निम् - आवाहयामि
२१. ओम् भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः - प्रजापतिम् - आवाहयामि
२२. ओम् भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः - सोमम् - आवाहयामि
२३. ओम् भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः - रुद्रम् - आवाहयामि
२४. ओम् भूर्भुवः स्वः अदितये नमः - अदितिम् - आवाहयामि

☐ २-२ दाना अक्षत कमल-दल के बाहर चौकी पर ही चारों ओर छिड़क कर दिक्पाल का आवाहन करे :—

१. पूर्व में	ओम् इन्द्राय नमः	- इन्द्रम्	- आवाहयामि
२. अग्निकोण में	ओम् अग्नये नमः	- अग्निम्	- आवाहयामि
३. दक्षिण में	ओम् यमाय नमः	- यमम्	- आवाहयामि
४. नैऋत्यकोण में	ओम् निर्ऋतये नमः	- निर्ऋतिम्	- आवाहयामि
५. पश्चिम में	ओम् वरुणाय नमः	- वरुणम्	- आवाहयामि
६. वायव्यकोण में	ओम् वायवे नमः	- वायुम्	- आवाहयामि
७ उत्तर में	ओम् कुवेराय नमः	- कुवेरम्	- आवाहयामि
८. ईशानकोण में	ओम् ईशानाय नमः	- ईशानम्	- आवाहयामि
९. ईशान-पूर्व के बीच	ओम् ब्रह्मणे नमः	- ब्रह्माणम्	- आवाहयामि
१०. नैऋत्य-पश्चिम के बीच	ओम् अनन्ताय नमः	- अनन्तम्	- आवाहयामि

☐ हाथ का शेष अक्षत चौकी पर छोड़कर प्रतिष्ठा करे---मंत्र—

ओम् मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनो त्वरिष्टं
यज्ञ७ँसमि मन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मानयन्तामोम् प्रतिष्ठ।
ओम् भूर्भूवः स्वः भगादि देवताः दिक्पालसहिताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥

मघा नक्षत्र में

☐ निम्नलिखित नामों को पढ़कर २४ दल-कमल पर अक्षत छिड़के—

१ ओम् भूर्भुवः स्वः अर्यमणे नमः	- अर्यमणम्	- आवाहयामि
२. ओम् भूर्भुवः स्वः सवित्रे नमः	- सवितारम्	- आवाहयामि
३. ओम् भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः	- विश्वकर्माणम्	- आवाहयामि
४. ओम् भूर्भुवः स्वः वायवे नमः	- वायुम्	- आवाहयामि
५. ओम् भूर्भुवः स्वः इन्द्राग्नीभ्यां नमः	- इन्द्राग्न्योः	- आवाहयामि
६. ओम् भूर्भुवः स्वः मित्राय नमः	- मित्रम्	- आवाहयामि
७. ओम् भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः	- इन्द्रम्	- आवाहयामि
८. ओम् भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः	- निर्ऋतिम्	- आवाहयामि
९. ओम् भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः	- अपः	- आवाहयामि
१०. ओम् भूर्भुवः स्वः विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः	- विश्वान् देवान्	- आवाहयामि
११. ओम् भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः	- विष्णुम्	- आवाहयामि
१२. ओम् भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः	- अष्टवसून्	- आवाहयामि
१३. ओम् भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः	- वरुणम्	- आवाहयामि
१४. ओम् भूर्भुवः स्वः अजैकपदे नमः	- अजैकपादम्	- आवाहयामि

१५. ओम् भूर्भुवः स्वः अहिर्बुध्न्याय नमः - अहिर्बुध्न्यम् - आवाहयामि
१६. ओम् भूर्भुवः स्वः पूष्णे नमः - पूषाणम् - आवाहयामि
१७. ओम् भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः - अश्विनौ - आवाहयामि
१८. ओम् भूर्भुवः स्वः यमाय नमः - यमम् - आवाहयामि
१९. ओम् भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः - अग्निम् - आवाहयामि
२०. ओम् भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः - प्रजापतिम् - आवाहयामि
२१. ओम् भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः - सोमम् - आवाहयामि
२२. ओम् भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः - रुद्रम् - आवाहयामि
२३. ओम् भूर्भुवः स्वः अदितये नमः - अदितिम् - आवाहयामि
२४. ओम् भूर्भुवः स्वः बृहस्पतये नमः - बृहस्पतिम् - आवाहयामि

☐ २-२ दाना अक्षत कमल-दल के बाहर चौकी पर ही क्रमशः चारों ओर छोड़ें—

१. पूर्व में ओम् इन्द्राय नमः - इन्द्रम् - आवाहयामि
२. अग्निकोण में ओम् अग्नये नमः - अग्निम् - आवाहयामि
३. दक्षिण में ओम् यमाय नमः - यमम् - आवाहयामि
४. नैऋत्यकोण में ओम् निर्ऋतये नमः - निर्ऋतिम् - आवाहयामि

५. पश्चिम में ओम् वरुणाय नमः - वरुणम् - आवाहयामि
६. वायव्यकोण में ओम् वायवे नमः - वायुम् - आवाहयामि
७. उत्तर में ओम् कुबेराय नमः - कुबेरम् - आवाहयामि
८. ईशानकोण में ओम् ईशानाय नमः - ईशानम् - आवाहयामि
९. ईशान-पूर्व के बीच में ओम् ब्रह्मणे नमः - ब्रह्माणम् - आवाहयामि
१०. नैऋत्य-पश्चिम के बीच में ओम् अनन्ताय नमः - अनन्तम् - आवाहयामि

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इहमादयान्तामोम् प्रतिष्ठ ॥
ओम् भूर्भुवः स्वः चतुर्विंशतिदेवताः दिक्पाल सहिताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥

ज्येष्ठा नक्षत्र में

☐ ज्येष्ठा नक्षत्र में निम्नलिखित नामों को पढ़कर २४ दल-कमल पर अक्षत छिड़के—

१. ओम् भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः - अपः - आवाहयामि
२. ओम् भूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः - विश्वान् देवान् - आवाहयामि
३. ओम् भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः - विष्णुम् - आवाहयामि
४. ओम् भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः - अष्टवसून - आवाहयामि
५. ओम् भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः - वरुणम् - आवाहयामि

६. ओम् भूर्भुवः स्वः अजैकपदे नमः	- अजैकपादम्	- आवाहयामि
७. ओम् भूर्भुवः स्वः अहिर्बुध्न्याय नमः	- अहिर्बुध्न्यम्	- आवाहयामि
८. ओम् भूर्भुवः स्वः पूष्णे नमः	- पूषाणम्	- आवाहयामि
९. ओम् भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः	- अश्विनौ	- आवाहयामि
१०. ओम् भूर्भुवः स्वः यमाय नमः	- यमम्	- आवाहयामि
११. ओम् भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः	- अग्निम	- आवाहयामि
१२. ओम् भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः	- प्रजापतिम्	- आवाहयामि
१३. ओम् भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः	- सोमम्	- आवाहयामि
१४. ओम् भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः	- रुद्रम्	- आवाहयामि
१५. ओम् भूर्भुवः स्वः अदितये नमः	- अदितिम्	- आवाहयामि
१६. ओम् भूर्भुवः स्वः वृहस्पतये नमः	- वृहस्पतिम्	- आवाहयामि
१७. ओम् भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः	- सर्पान्	- आवाहयामि
१८. ओम् भूर्भुवः स्वः पितृभ्यो नमः	- पितृन्	- आवाहयामि
१९. ओम् भूर्भुवः स्वः भगाय नमः	- भगम्	- आवाहयामि
२०. ओम् भूर्भुवः स्वः अर्यमणे नमः	- अर्यमणम्	- आवाहयामि
२१. ओम् भूर्भुवः स्वः सवित्रे नमः	- सवितारम्	- आवाहयामि
२२. ओम् भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः	- विश्वकर्माणम्	- आवाहयामि
२३. ओम् भूर्भुवः स्वः वायवे नमः	- वायम्	- आवाहयामि
२४. ओम् भूर्भुवः स्वः इन्द्राग्नीभ्यां नमः	- इन्द्राग्न्योः	- आवाहयामि

□ २-२ दाना अक्षत चौकी पर ही कमल-दल के बाहर चारों ओर क्रमशः छोड़ते हुए निम्न मंत्रों को पढ़े—

१. पूर्व में	ओम् इन्द्राय नमः	- इन्द्रम्	- आवाहयामि
२. अग्निकोण में	ओम् अग्नये नमः	- अग्निम्	- आवाहयामि
३. दक्षिण में	ओम् यमाय नमः	- यमम्	- आवाहयामि
४. नैऋत्यकोण में	ओम् निर्ऋतये नमः	- निर्ऋतिम्	- आवाहयामि
५. पश्चिम में	ओम् वरुणाय नमः	- वरुणम्	- आवाहयामि
६. वायव्यकोण में	ओम् वायवे नमः	- वायुम्	- आवाहयामि
७. उत्तर में	ओम् सोमाय नमः	- सोमम्	- आवाहयामि
८. ईशानकोण में	ओम् ईशानाय नमः	- ईशानम्	- आवाहयामि
९. ईशान-पूर्व के बीच में	ओम् ब्रह्मणे नमः	- ब्रह्माणम्	- आवाहयामि
१०. नैऋत्य-पश्चिम के बीच में	ओम् अनन्ताय नमः	- अनन्तम्	- आवाहयामि

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ᳮ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इहमादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।
ओम् भूर्भूवः स्वः चतुर्विंशति देवताः दिक्पाल सहिताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥

मूल नक्षत्र में

☐ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत २४ दल कमल पर छिड़के —नाम मंत्र पढ़े—

१. ओम् भूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः	- विश्वान् देवान्	- आवाहयामि
२. ओम् भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः	- विष्णुम्	- आवाहयामि
३. ओम् भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः	- अष्टवसून्	- आवाहयामि
४. ओम् भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः	- वरुणम्	- आवाहयामि
५. ओम् भूर्भुवः स्वः अजैकपदे नमः	- अजैकपादम्	- आवाहयामि
६. ओम् भूर्भुवः स्वः अहिर्बुध्न्याय नमः	- अहिर्बुध्न्यम्	- आवाहयामि
७. ओम् भूर्भुवः स्वः पूष्णे नमः	- पूषाणम्	- आवाहयामि
८. ओम् भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः	- अश्विनौ	- आवाहयामि
९. ओम् भूर्भुवः स्वः यमाय नमः	- यमम्	- आवाहयामि
१०. ओम् भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः	- अग्निम	- आवाहयामि
११. ओम् भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः	- प्रजापतिम्	- आवाहयामि
१२. ओम् भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः	- सोमम्	- आवाहयामि
१३. ओम् भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः	- रुद्रम्	- आवाहयामि
१४. ओम् भूर्भुवः स्वः अदितये नमः	- अदितिम्	- आवाहयामि
१५. ओम् भूर्भुवः स्वः वृहस्पतये नमः	- वृहस्पतिम्	- आवाहयामि
१६. ओम् भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः	- सर्पान्	- आवाहयामि
१७. ओम् भूर्भुवः स्वः पितृभ्यो नमः	- पितृन्	- आवाहयामि
१८. ओम् भूर्भुवः स्वः भगाय नमः	- भगम्	- आवाहयामि
१९. ओम् भूर्भुवः स्वः अर्यमणे नमः	- अर्यमणम्	- आवाहयामि
२०. ओम् भूर्भुवः स्वः सवित्रे नमः	- सवितारम्	- आवाहयामि
२१. ओम् भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः	- विश्वकर्माणम्	- आवाहयामि
२२. ओम् भूर्भुवः स्वः वायवे नमः	- वायुम्	- आवाहयामि
२३. ओम् भूर्भुवः स्वः इन्द्राग्नीभ्यां नमः	- इन्द्राग्न्योः	- आवाहयामि
२४. ओम् भूर्भुवः स्वः मित्राय नमः	- मित्रम्	- आवाहयामि

☐ निम्न नामों को पढ़कर कमल-दल के बाहर चारों ओर अक्षत छोड़कर दिक्पाल का आवाहन करे—

१. पूर्व में	ओम् इन्द्राय नमः	- इन्द्रम्	- आवाहयामि
२. अग्निकोण में	ओम् अग्नये नमः	- अग्निम्	- आवाहयामि
३. दक्षिण में	ओम् यमाय नमः	- यमम्	- आवाहयामि
४. नैऋत्यकोण में	ओम् निर्ऋतये नमः	- निर्ऋतिम्	- आवाहयामि
५. पश्चिम में	ओम् वरुणाय नमः	- वरुणम्	- आवाहयामि

६. वायव्यकोण में — ओम् वायवे नमः — वायुम् — आवाहयामि
७. उत्तर में — ओम् सोमाय नमः — सोमम् — आवाहयामि
८. ईशानकोण में — ओम् ईशानाय नमः — ईशानम् — आवाहयामि
९. ईशान-पूर्व के बीच में — ओम् ब्रह्मणे नमः — ब्रह्माणम् — आवाहयामि
१०. नैऋत्य-पश्चिम के बीच में — ओम् अनन्ताय नमः — अनन्तम् — आवाहयामि

☐ हाथ का शेष अक्षत छोड़कर निम्न मंत्र पढ़े—

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः नैर्ऋत्यादिदेवताः दिक्पालसहिताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥

अश्विनी नक्षत्र में

☐ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ में २-२ दाना अक्षत २४ दल-कमल पर छिड़के—

१. ओम् भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः — अग्निम् — आवाहयामि
२. ओम् भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः — प्रजापतिम् — आवाहयामि
३. ओम् भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः — सोमम् — आवाहयामि
४. ओम् भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः — रुद्रम् — आवाहयामि
५. ओम् भूर्भुवः स्वः अदितये नमः — अदितिम् — आवाहयामि
६. ओम् भूर्भुवः स्वः वृहस्पतये नमः — वृहस्पतिम् — आवाहयामि
७. ओम् भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः — सर्पान् — आवाहयामि
८. ओम् भूर्भुवः स्वः पितृभ्यो नमः — पितृन् — आवाहयामि
९. ओम् भूर्भुवः स्वः भगाय नमः — भगम् — आवाहयामि
१०. ओम् भूर्भुवः स्वः अर्यमणे नमः — अर्यमणम् — आवाहयामि
११. ओम् भूर्भुवः स्वः सवित्रे नमः — सवितारम् — आवाहयामि
१२. ओम् भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः — विश्वकर्माणम् — आवाहयामि
१३. ओम् भूर्भुवः स्वः वायवे नमः — वायुम् — आवाहयामि
१४. ओम् भूर्भुवः स्वः इन्द्राग्नीभ्यां नमः — इन्द्राग्न्योः — आवाहयामि
१५. ओम् भूर्भुवः स्वः मित्राय नमः — मित्रम् — आवाहयामि
१६. ओम् भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः — इन्द्रम् — आवाहयामि
१७. ओम् भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः — निर्ऋतिम् — आवाहयामि
१८. ओम् भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः — अपः — आवाहयामि
१९. ओम् भूर्भुवः स्वः विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः — विश्वान् देवान् — आवाहयामि
२०. ओम् भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः — विष्णुम् — आवाहयामि
२१. ओम् भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः — अष्टवसून् — आवाहयामि
२२. ओम् भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः — वरुणम् — आवाहयामि

२३. ओम् भूर्भुवः स्वः अजैकपदे नमः - अजैकपादम् - आवाहयामि

२४. ओम् भूर्भुवः स्वः अहिर्बुध्न्याय नमः - अहिर्बुध्न्यम् - आवाहयामि

☐ निम्न मंत्र पढ़कर कमल-दल के बाहर चौकी पर ही चारों ओर २-२ दाना अक्षत छिड़के—

१. पूर्व में	ओम् इन्द्राय नमः	- इन्द्रम्	- आवाहयामि
२. अग्निकोण में	ओम् अग्नये नमः	- अग्निम्	- आवाहयामि
३. दक्षिण में	ओम् यमाय नमः	- यमम्	- आवाहयामि
४. नैऋत्यकोण में	ओम् निर्ऋतये नमः	- निर्ऋतिम्	- आवाहयामि
५. पश्चिम में	ओम् वरुणाय नमः	- वरुणाय नमः	- आवाहयामि
६. वायव्यकोण में	ओम् वायवे नमः	- वायुम्	- आवाहयामि
७. उत्तर में	ओम् सोमाय नमः	- सोमम्	- आवाहयामि
८. ईशानकोण में	ओम् ईशानाय नमः	- ईशानम्	- आवाहयामि
९. ईशान-पूर्व के बीच में	ओम् ब्रह्मणे नमः	- ब्रह्माणम्	- आवाहयामि
१०. नैर्ऋत्य-पश्चिम के बीच में	ओम् अनन्ताय नमः	- अनन्तम्	- आवाहयामि

☐ हाथ का शेष अक्षत छिड़क कर निम्न मन्त्र पढ़े—

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ॐ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इह मादयन्ता मोम् प्रतिष्ठ ।
ओम् भूर्भुवः स्वः चतुर्विंशति देवताः दिक्पालसहिताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥

रेवती नक्षत्र में

☐ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत २४ दल-कमल पर छिड़के—

१. ओम् भूर्भुवः स्वः यमाय नमः	- यमम्	- आवाहयामि
२. ओम् भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः	- अग्निम्	- आवाहयामि
३. ओम् भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः	- प्रजापतिम्	- आवाहयामि
४. ओम् भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः	- सोमम्	- आवाहयामि
५. ओम् भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः	- रुद्रम	- आवाहयामि
६. ओम् भूर्भुवः स्वः अदितये नमः	- अदितिम्	- आवाहयामि
७. ओम् भूर्भुवः स्वः वृहस्पतये नमः	- वृहस्पतिम्	- आवाहयामि
८. ओम् भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः	- सर्पान्	- आवाहयामि
९. ओम् भूर्भवः स्वः पितृभ्यो नमः	- पितृन्	- आवाहयामि
१०. ओम् भूर्भुवः स्वः भगाय नमः	- भगम्	- आवाहयामि
११. ओम् भूर्भुवः स्वः अर्यमणे नमः	- अर्यमणम्	- आवाहयामि
१२. ओम् भूर्भुवः स्वः सवित्र नमः	- सवितारम्	- आवाहयामि
१३. ओम् भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः	- विश्वकर्माणम्	- आवाहयामि
१४. ओम् भूर्भुवः स्वः वायवे नमः	- वायुम्	- आवाहयामि

१५. ओम् भूर्भुवः स्वः इन्द्राग्नीभ्यां नमः	- इन्द्राग्न्योः	- आवाहयामि
१६. ओम् भूर्भुवः स्वः मित्राय नमः	- मित्रम्	- आवाहयामि
१७. ओम् भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः	- इन्द्रम्	- आवाहयामि
१८. ओम् भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः	- निर्ऋतिम्	- आवाहयामि
१९. ओम् भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः	- अपः	- आवाहयामि
२०. ओम् भूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः	- विश्वान् देवान्	- आवाहयामि
२१. ओम् भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः	- विष्णुम्	- आवाहयामि
२२. ओम् भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः	- अष्टवसून्	- आवाहयामि
२३. ओम् भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः	- वरुणम्	- आवाहयामि
२४. ओम् भूर्भुवः स्वः अजैकपदे नमः	- अजैकपादम्	- आवाहयामि

☐ निम्न नामों को पढ़कर २-२ दाना अक्षत कमल-दल के बाहर चौकी पर चारों ओर छिड़के—

१. पूर्व में	ओम् इन्द्राय नमः	- इन्द्रम्	- आवाहयामि
२. अग्निकोण में	ओम् अग्नये नमः	- अग्निम्	- आवाहयामि
३. दक्षिण में	ओम् यमाय नमः	- यमम्	- आवाहयामि
४. नैऋत्यकोण में	ओम् निर्ऋतये नमः	- निर्ऋतिम्	- आवाहयामि
५. पश्चिम में	ओम् वरुणाय नमः	- वरुणम्	- आवाहयामि
६. वायव्य कोण में	ओम् वायवे नमः	- वायुम्	- आवाहयामि
७. उत्तर में	ओम् सोमाय नमः	- सोमम्	- आवाहयामि
८. ईशान में	ओम् ईशानाय नमः	- ईशानम्	- आवाहयामि
९. ईशान-पूर्व के बीच में	ओम् ब्रह्मणे नमः	- ब्रह्माणम्	- आवाहयामि
१०. नैर्ऋत्य-पश्चिम के बीच में	ओम् अनन्ताय नमः	- अनन्तम्	- आवाहयामि

☐ हाथ का शेष अक्षत चौकी पर छोड़ दे—निम्न मन्त्र पढ़ें—

ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इह मादयन्ता मोम् प्रतिष्ठ ॥
ओम् भूर्भुवः स्वः चतुर्विंशति देवताः दिक्पाल सहिताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।

कमल-दल की पूजा

☐ कुशा या आम्रपल्लव से तीन बार चौकी पर छोड़ें—

ओम् पादयोः पाद्यम् समर्पयामि ।
हस्तयोः अर्घ समर्पयामि ।
मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

☐ स्नान हेतु फिर जल छिड़क दे—

ओम् स्नानीयं जलं समर्पयामि ।

☐ रोड़ी चढ़ावे—

ओम् गन्धं समर्पयामि ।

☐ अक्षत — ओम् अक्षतं समर्पयामि ।

☐ फूल — ओम् पुष्पाणि समर्पयामि ।

☐ धूप-दीप — ओम् धूपम् आघ्रापयामि ।
ओम् दीपं दर्शयामि ।

☐ हाथ धोकर नैवेद्य — ओम् नैवेद्यं निवेदयामि ।

☐ जल — ओम् नैवेद्यान्ते जलं समर्पयामि ।

☐ पान-सुपारी — ओम् ताम्बूल-पूगीफलं समर्पयामि ।

☐ दक्षिणा — ओम् दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि ।

☐ हाथ में जल लेकर छोड़ दें — ओम् अनया पूजया प्रीयन्तां न मम ।

☐ फूल लेकर प्रार्थना करें — ओम् पूजां गह् णीत यद् दत्तां सर्वदा मे प्रसीदत ।
क्षेमकर्त्तारः शान्तिकर्त्तारः तुष्टिकर्त्तारः पुष्टिकर्त्तार वरदा भवन्तु ।।

प्रधान देवता पूजन

☐ कमलदल की पूजा के बाद चौकी पर ताँबे का कलश स्थापित करे और इस कलश की पूजा करे,
[कलश स्थापन—पूजन वेदी-पूजन के अनुसार करे]

टिप्पणी—जिस नक्षत्र में जन्म हो, उसी नक्षत्र के देवताओं का आवाहन-पूजन प्रतिमा में करना चाहिए । सभी मूल नक्षत्रों के देवताओं का नाम अलग-अलग लिखा है, ध्यान से देख लें ।

☐ कलश पूजन के बाद—सोने की प्रतिमा स्थापित करे—
[स्वर्ण प्रतिमा में अग्नि-उत्तारण-प्राण-प्रतिष्ठा—वेदी पूजन के अनुसार करे]

☐ स्वर्ण प्रतिमा कलश पर स्थापित कर उसकी षोडशोपचार पूजा करे—

प्रतिमा पूजन विधि : अश्लेषा नक्षत्र में

आवाहन-प्रतिष्ठा —

☐ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से स्वर्ण प्रतिमा पर अक्षत छिड़क कर
अधि-प्रत्यधि सहित प्रधान देवता का आवाहन करे—

अश्लेषा देवता

(१) ओम् नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मयु ।
येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।
ओम् भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः सर्पान्-आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि ।।

टिप्पणी—अश्लेषा नक्षत्र के स्वामी देवता (उरग) सर्प हैं । अधिदेवता पुष्य नक्षत्र के स्वामी बृहस्पति हैं तथा प्रत्यधिदेवता मघा नक्षत्र के स्वामी पितर हैं ।

अश्लेषा में प्रार्थना-विशेष मंत्र — ओम् सर्पोरक्तस्त्रिनेत्रश्च द्विभुजः पीत वस्त्रकः ।
फलकासिधरस्तीक्ष्णो दिव्याभरणभूषितः ।

अश्लेषा में अर्ध विशेष मंत्र — ओम् सर्पाधीश नमस्तुभ्यं नागानां च गणाधिप ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सर्वारिष्ट प्रशान्तये ।।

(२) ओम् बृहस्पतेऽअति यदर्यो अर्हाद्युमद् विभाति क्रतुमज् जनेषु ।
यद् दी दयच्छवसऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम ॥
ओम् भूर्भुवः स्वः अधिदेवाय बृहस्पतये नमः । बृहस्पतिम्—आवाहयामि ।

अश्लेषा —प्रत्यधिदेवता

(३) ओम् पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः
स्वधा नमः । प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधाः नमः ।
अक्षन् पितरोऽमी मदन्त पितरो ती तृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥
ओम् भूर्भुवः स्वः प्रत्यधिदेवेभ्यः पितृभ्यो नमः । पितृन्—आवाहयामि ।

☐ हाथ का शेष अक्षत चढ़ाकर निम्न मंत्र पढ़े—

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ ᳄ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।

मघा नक्षत्र में

आवाहन ☐ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत स्वर्ण प्रतिमा पर छिड़क कर मघा नक्षत्र में प्रधान देवता का अधि-प्रत्यधि सहित आवाहन—प्रतिष्ठा करे—निम्न मंत्र पढ़ता रहे—

मघा प्रधान देवता

ओम् पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ।
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन् पितरोऽमी मदन्त पितरो
ती तृपन्त पितरः शुन्धध्वम् ॥
ओम् भूर्भुवः स्वः पितृभ्यो नमः । पितृन् —आवाहयामि ।

मघा-अधिदेवता

ओम् नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥
ओम् भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः । सर्पान्— आवाहयामि ॥

मघा-प्रत्यधिदेवता

ओम् भग प्रणेतर्भग सत्य राधो भगे मां धिय मुदवा ददन्नः ।
भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृ वन्तः स्याम ॥
ओम् भूर्भुवः स्वः भगाय नमः । भगम्—आवाहयामि ।

☐ हाथ का शेष अक्षत प्रतिमा पर चढ़ा दे निम्न मंत्र पढ़े—

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ᳄ समिमन्दधातु ।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ॥

टिप्पणी— मघा के प्रधान देवता पितर और अधिदेवता अश्लेषा नक्षत्र के स्वामी सर्प एवं प्रत्यधिदेवता पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के स्वामी भग (सूर्य) हैं ।

ज्येष्ठा नक्षत्र में

☐ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत स्वर्ण प्रतिमा पर छिड़क कर प्रधान देवता का अधि-प्रत्यधि सहित आवाहन करे—मंत्र पढ़ता रहे—

ज्येष्ठा नक्षत्र देवता—

ओम् इन्द्र आसां नेता वृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।
देव सेनाना मभि भञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ।।
ओम् भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः । इन्द्रम्-आवाहयामि ।

ज्येष्ठा अधिदेवता—

ओम् मित्रस्य चर्षणी धृतोऽवो देवस्य सानसि द्युम्नं चित्र श्रवस्तमम् ।
ओम् भूर्भुवः स्वः मित्राय नमः । मित्रम्—आवाहयामि ।

ज्येष्ठा प्रत्यधिदेवता—

ओम् असुन्वन्तम यजमान मिच्छस्तेनस्येत्या मन्विहि तस्करस्य ।
अन्य मस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।।

टिप्पणी—(१) ज्येष्ठा के प्रधान देवता इन्द्र हैं तथा अधिदेवता अनुराधा नक्षत्र के स्वामी मित्र हैं । प्रत्यधिदेवता मूल नक्षत्र के स्वामी निर्ऋति हैं ।

(२) अर्घ विशेष मंत्र—

ओम् नमस्ते सुरनाथाय नमस्तुभ्यं शचीपते । गृहाणार्घ मया दत्तं गण्डदोष प्रशान्तये ।

ओम् भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः । निर्ऋतिम्—आवाहयामि ।

☐ हाथ का शेष अक्षत प्रतिमा पर चढ़ा दे—मंत्र पढ़े—

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं
यज्ञꣳसमिमन्दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।।

मूल नक्षत्र में

आवाहन— ☐ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर २-२ दाना अक्षत स्वर्ण प्रतिमा पर छोड़कर अधि-प्रत्यधि सहित प्रधान देवता का आवाहन करे—मंत्र पढ़ता रहे—

मूल के प्रधान देवता

(१) ओम् असुन्वन्तम यजमान मिच्छस्तेन स्येत्यामन्विहि तस्करस्य ।
अन्यमस्म दिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।।
ओम् भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः । निर्ऋतिम्—आवाहयामि ।

मूल के अधिदेवता—

(२) ओम् त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्रꣳहवे हवे सुहव ꣳ शूर मिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूत मिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ।।
ओम् भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः । इन्द्रम्—आवाहयामि ।

टिप्पणी—मूल नक्षत्र के प्रधान देवता निर्ऋति हैं । अधिदेवता ज्येष्ठा नक्षत्र के स्वामी इन्द्र हैं । प्रत्यधिदेवता नक्षत्र के स्वामी आप हैं ।

मूल के प्रत्यधिदेवता—

(३) ओम् आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।
ओम् भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः। अपः—आवाहयामि।

☐ हाथ का शेष अक्षत चढ़ाकर निम्न मंत्र पढ़े—

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँसमिमन् दधातु।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ।

अश्विनी नक्षत्र में

आवाहन—

☐ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत स्वर्ण प्रतिमा पर छिड़क कर अधि-प्रत्यधि सहित प्रधान देवता का आवाहन करे—

अश्विनी के प्रधान देवता

ओम् अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्।
वाचेन्द्रो वलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥
ओम् भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः। अश्विनौ—आवाहयामि।

टिप्पणी—अश्विनी नक्षत्र के प्रधान देवता अश्विनीकुमार हैं। अधिदेवता रेवती नक्षत्र के स्वामी पूषा हैं। प्रत्यधिदेवता भरणी नक्षत्र के स्वामी यम हैं।

अश्विनी के अधिदेवता—

ओम् पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि॥
ओम् भूर्भुवः स्वः पूष्णे नमः। पूषाणम्—आवाहयामि।

अश्विनी के प्रत्यधिदेवता—

ओम् यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥
ओम् भूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यमम्—आवाहयामि।

☐ हाथ के शेष अक्षत चढ़ाकर निम्न मंत्र पढ़े—

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु।
विश्वेदेवा स इहमादयन्तामोम् प्रतिष्ठ॥

रेवती नक्षत्र-प्रधान देवता

आवाहन ☐ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत स्वर्ण प्रतिमा पर छिड़क कर अधि-प्रत्यधि सहित प्रधान देवता का आवाहन करे।

रेवती प्रधान देवता—

ओम् पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोस्तारस्त इह स्मसि।
ओम् भूर्भुवः स्वः पूष्णे नमः। पूषाणम्—आवाहयामि।

रेवती के अधिदेवता—

ओम् शिवो नामासि स्वधि तिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हि ᳚ सीः।
निवर्त्तयाम्या युषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय।
ओम् भूर्भुवः स्वः अहिर्बुध्न्याय—आवाहयामि।

रेवती के प्रत्यधिदेवता—

ओम् या वां कशा मधुमत्यश्विना सनृतावती। तया यज्ञं भिमोक्षतम्॥
ओम् भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ—आवाहयामि।

☐ हाथ का शेष अक्षत चढ़ाकर निम्न मंत्र पढ़े—

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ᳚
समिमन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ॥

स्वर्णप्रतिमा पूजन

☐ १ फूल लेकर आसन के निमित्त निम्न मंत्र पढ़कर प्रतिमा पर चढ़ा दे—

ओम् पुरुष एवेद ᳚ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उता मृतत्वस्येशानो यदन्ने नाति रोहति॥

☐ पाद्य-अर्द्ध आचमन हेतु ३ बार जल छोड़े—पंचामृत स्नान तथा शुद्ध स्नान कराये।

टिप्पणी—रेवती नक्षत्र के प्रधान देवता पूषा हैं। अधिदेवता उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के स्वामी अहिर्बुध्न्य हैं। प्रत्यधिदेवता अश्विनी नक्षत्र के स्वामी अश्विनीकुमार हैं।

☐ वस्त्र-जनेऊ-चंदन-अक्षत-पुष्पमाला-धूप-दीप-नैवेद्य-फल-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा-आदि चढ़ाकर विधिवत् पूजन करे।

[इन सब का मंत्र वेदी पूजन पद्धति में प्रधान देवता-पूजन में देखे—पढ़े]

☐ प्रधान देवता की पूजा के बाद हवन करे।

हवन

अग्निपूजन	—	वेदी पूजन पद्धति के अनुसार			—अग्निपूजन करे।
ब्राह्मणवरण	—	"	"	"	—ब्राह्मणवरण करे।
कुशकण्डिका	—	"	"	"	—कुशकण्डिका करे।
हवन	—	"	"	"	—हवन करे।

☐ षोडश मातृका-वास्तुदेवता-नवग्रह-योगिनी के नामों से हवन करने के बाद—

स्त्री तथा शिशु को बुलावे

☐ स्त्री तथा मूल में उत्पन्न बालक को बुलाकर-अपने दाहिने बिठाए।

आचमन-पवित्र — स्त्री पर जल छिड़के—मंत्र पढ़ें

ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यःस्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

☐ ३ बार आचमन करा दे : हाथ धुला दे।

ओम् नारायणाय नमः। ओम् केशवाय नमः। ओम् माधवाय नमः।
हृषीकेशाय नमः। पुण्डरीकाक्षः पुनातु॥

गौरी-गणेश पूजन

☐ स्त्री अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करे—

ओम् वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ सर्वदा अविघ्नमस्तु ।

☐ हाथ का अक्षत-पुष्प गौरी-गणेश पर चढ़ा दे—गौरी-गणेश का पूजन कर दे—

मूलनक्षत्र मंत्र से हवन—

☐ फिर स्त्री तथा बालक-पिता दोनों मूल-नक्षत्र के मंत्रों से हवन करें—

☐ कम-से-कम ५ बार बालक के हाथ से छुवाकर भी आहुति डाल दे—

मूलनक्षत्र आहुति—पहले कमलदल देवता को आहुति दे—

☐ जिस नक्षत्र में जन्म हो—उस नक्षत्र के २४ दल कमल पर आवाहित देवताओं के नाम से १-१ आहुति दे ।

कमलदल देवताओं के नाम :—

☐ आश्लेषा नक्षत्र के लिए पृष्ठ १८ देखें
☐ मघा नक्षत्र के लिए पृष्ठ २१ देखें
☐ ज्येष्ठा नक्षत्र के लिए पृष्ठ २३ देखें
☐ मूल नक्षत्र के लिए पृष्ठ २६ देखें
☐ अश्विनी नक्षत्र के लिए पृष्ठ २८ देखें
☐ रेवती नक्षत्र के लिए पृष्ठ ३१ देखें

प्रधान देवता आहुति—

☐ जिस नक्षत्र का जन्म हो, उस नक्षत्र के प्रधान देवता-अधिदेवता तथा प्रत्यधिदेवता के मंत्र से १-१ आहुति दे ।

अधि-प्रत्यधिदेवता मंत्रों से हवन—

☐ अश्लेषा नक्षत्र के प्रधान—अधि-प्रत्यधिदेवता नाम पृष्ठ ३५ पर देखें
☐ मघा नक्षत्र ,, ,, ,, ,, ,, ३६ पर देखें
☐ ज्येष्ठा नक्षत्र ,, ,, ,, ,, ,, ३८ पर देखें
☐ मूल नक्षत्र ,, ,, ,, ,, ,, ३९ पर देखें
☐ अश्विनी नक्षत्र ,, ,, ,, ,, ,, ४० पर देखें
☐ रेवती नक्षत्र ,, ,, ,, ,, ,, ४१ पर देखें

२७ छिद्र घट स्नानविधि—

☐ इसती आहुति देकर शेष आहुति रोक दे,

☐ बालक पिता अपने सामने स्वस्तिका (सथिया) बनाकर — ⊙ उसके ऊपर २७ छेद का घड़ा रखे,

☐ बगल में १ अन्य पात्र में २७ घाट का पानी रखो,

☐ घड़ा के भीतर २७ घाट की मिट्टी एवं २७ पेड़ की पत्ती डाल दे,

☐ घड़ा के भीतर दशौषधि–पंचरत्नी आदि डाल दे ।

२७ छिद्र घट-पूजन

☐ घड़ा का पूजन करे : अक्षत छोड़कर प्रतिष्ठा करे—निम्न मंत्र पढ़े ।

टिप्पणी—कुछ लोग प्रधान देवता के मंत्र से १०८ (१ माला) आहुति देते हैं ।

ओम् तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्ता शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमाना वरुणेह वोध्युरुश ँ समान आयुः प्रमोषीः ।
ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टम् ।
यज्ञ ँ समिमन्दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्ता मोम् प्रतिष्ठ ।।
ओम् कलशे वरुणाय नमः । वरुणम्—आवाहयामि ।।

☐ गन्ध-अक्षत-पुष्प आदि छोड़कर पंचो चार पूजन कर दे ।

☐ हाथ में जल लेकर छोड़ दे—

अनेन पूजनेन वरुणदेवः प्रीयतां न मम ।

☐ प्रार्थना करे—

ओम् वरुणः क्षत्रमिन्द्रियं भगेन सविता श्रियम् ।
सुत्रामा यशसा वलं दधाना यज्ञमाशत ।।*

घट जल अभिषेक

☐ घट पूजन के बाद कुशा या आम्रपल्लव से २७ घाट के पानी को अपने ऊपर तथा पत्नी तथा बालक पर छिड़के—निम्न मंत्र पढ़ता रहे—

टिप्पणी—*कुछ लोग यहीं पर नमस्ते रुद्रमन्यवे, आशुः शिशान, कृणुष्वपाजः, रक्षोहणम् त्र्यम्बकम्—आदि मंत्राध्यायों का पाठ करते हैं ।

(१) ओम् देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिचामि ।।

(२) ओम् देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिचामि ।।

(३) ओम् देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
अश्विनो भैषज्येन तेजसे ब्रह्म वर्चसा याभिषिचामि सरस्वत्यै
भैषज्येन वीर्या यान्नाद्यायाभिषिचामीन्द्रस्येन्द्रियेण वलाय
श्रियै यशसेऽभिषिचामि ।।

(४) ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानिपरासुव । यद् भद्रं तन्नआसुव ।।

(५) ओम् धामच्छदग्नि रिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ।
सचेतसो विश्वेदेवा यज्ञं प्रावन्तु न शुभे ।

(६) ओम् त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄं पाहि शृणुधी गिरः । रक्षातोक मुतत्मना ।

(७) ओम् अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्य नमी वस्य शुष्मिणः ।
प्रदातारं तारिष ऊर्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ।।

ओम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव-
शान्तिः सामा: शान्तिरेधि । ओम् शान्ति शान्ति शान्तिः ।।

२७ छिद्र घट स्नान करे—

- ☐ घट पूजन के बाद—दोनों हाथ की पवित्री (पैंती) उतार दे।
- ☐ १ बाँस की टोकरी में १ कम्बल का टुकड़ा बिछाकर ◉ उसी में २७ छेद का घड़ा रख दे।
- ☐ इसी टोकरी में २७ घाट का पानी वाला पात्र भी रख दे।
- ☐ नाउन इस टोकरी को उठाकर पूजन मंडप से बाहर पति-पत्नी तथा बालक को ले जाकर २७ घाट का पानी २७ छेद के घड़े में डालकर तीनों को उसी से स्नान करा दे।

शुद्ध स्नान—

- ☐ पत्नी-बालक भीतर जाकर विधिवत शुद्ध स्नान करे,
- ☐ पीली धोती आदि पहन कर पांव में महावर लगाकर सौभाग्य वस्तुओं से अलंकृत हों,
- ☐ बालक को भी नया वस्त्र पहना कर अलंकृत करे,
- ☐ बालक का पिता बाल आदि बनवाकर शुद्ध स्नान करे,
- ☐ पीली-धोती दुपट्टा जनेऊ धारण करे ◉ पांव में महावर आदि लगाकर—

पूजन मंडप में फिर आगमन—

☐ पत्नी तथा बालक के साथ पूजन मंडप में फिर आवे ☐ अपने-अपने स्थान पर बैठकर—ऊपर जल छिड़के।

आचमन-प्राणायाम—

☐ आचमन-प्राणायम-करे—पवित्री पहने ☐ नाउन दोनों (पति-पत्नी) की गाँठ बांध दे,

गौरी-गणेश-पूजन ☐ गौरी-गणेश की फिर से पंचोपचार पूजा कर दें

हवन करे ☐ शेष (हवन सामग्री) साकल्य का हवन करे—मंत्र निम्न है—

स्विष्टकृद् होम—

ओम् अग्नये नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम।
ओम् अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

(१) ओम् भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम।

(२) ओम् भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।

(३) ओम् स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।

(४) ओम् त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासि सीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्त् स्वाहा।
इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

(५) ओम् स त्वन्नो अग्ने नमो भवोती ने दिष्टोऽअस्या उषसो व्युष्टौ
अव यक्ष्व नो वरुणᳬरराणो वीहि मृडीकᳬसुहवो न एधि स्वाहा।
इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

(६) ओम् अयाश्चाग्नेस्य नभि शस्तिपाश्च सत्व मित्व मयाऽअसि।
अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषजᳬस्वाहा।
इदमग्नये अयसे न मम।

(७) ओम् ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितताः महान्तः।
तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥

(८) ओम् उदुत्तमं वरुण पाश मस्म दवाधमं विमध्यम ँ श्रथाय।
अथा वय मादित्य व्रते तवा नागसोऽअदितये स्याम स्वाहा।
इदं वरुणायादित्यायाऽदितये न मम॥

(९) ओम् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।

- बलिप्रदान--इसके बाद
- दस दिक्पाल बलि — वेदी पूजन के अनुसार करे
- क्षेत्रपाल बलि — ,, ,, ,,
- पूर्णाहुति—करे — ,, ,, ,,
- वसोर्धारा—पूर्णपात्र संकल्प — ,, ,, ,,

अभिषेक—

- ब्राह्मण चारों वेदी के कलश से थोड़ा-थोड़ा जल एक पात्र में निकाल कर कुशा या आम्रपल्लव से यजमान तथा पत्नी व बालक पर अभिषेक करे—अभिषेक मंत्र निम्न हैं—

(१) ओम् योऽसौ वज्रधरो देवो महेन्द्रो गजवाहनः।
मूलजात शिशोर्दोषं मातृपित्रोर्व्यपोहतु॥

(२) ओम् योऽसौ शक्तिधरो देवो हुतभङ् मेषवाहनः।
सप्तजिह्वश्च देवोऽग्निर्मूल दोषं व्यपोहतु॥

(३) ओम् योऽसौ दण्डधरो देवो धर्मोमहिष वाहनः।
मूलजातशिशोर्दोषं व्यपोहतु यमो मम॥

(४) ओम् योऽसौ खड्गधरो देवो निर्ऋती राक्षसाधिपः।
प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं गण्डान्त सम्भवम्॥

(५) ओम् योऽसौ पाशधरो देवो वरुणश्च जलेश्वरः।
नकवाहः प्रचेता वो मूल दोषं व्यपोहतु॥

(६) ओम् योऽसौ देवो जगत् प्राणो मारुतो मृगवाहनः।
प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं बालस्य शान्तिदः॥

(७) ओम् योऽसौ निधिपतिर्देवो खड्गमृद्वाजिवाहनः।
मातृपित्रोः शिशोश्चैव मूलदोषं व्यपोहतु॥

(८) ओम् यौऽसौ पशुपतिर्देवः पिनाकी वृषवाहनः।
......मूल गण्डान्तं दोषमाशु व्यपोहतु ॥

(९) ओम् विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा लोकपाल नवग्रहाः।
मूल दोष प्रशमनं सर्वे कुर्वन्तु सर्वदा ॥

(१०) ओम् मूलर्क्षे जातबालस्य मातृपित्रोर्धनस्यच।
भ्रातृ ज्ञातिकुलस्थानां दोषं सर्वं व्यपोहतु ॥

(११) ओम् योऽसौ वागीश्वरो नाम ह्यधिदेवो वृहस्पतिः।
मातृपित्रोः शिशोश्चैव गण्डान्तं स व्यपोहतु ॥

(१२) ओम् पितरः सर्वभूतानां रक्षन्तु पितरः सदा।
...नक्षत्र जातस्य वित्तं च ज्ञातिबान्धवान् ॥

(१३) ओम् सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म विष्णु महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः ॥

(१४) ओम् प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्ड लोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥

टिप्पणी—अभिषेक के मंत्रों में जहाँ......है, वहाँ ज्येष्ठा-रेवती-अश्विनी-मघा-अश्लेषा-मूल—जिस नक्षत्र में जन्म हो उसका नाम लेना चाहिए।

(१५) ओम् वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥

(१६) ओम् कीर्तिर्लक्ष्मी धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिः तुष्टिश्च मातरः ॥

(१७) ओम् एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीव सितार्कजाः ॥

(१८) ओम् ग्रहास्त्वामभिषिंचन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वाः यक्ष राक्षस पन्नगाः ॥

(१९) ओम् ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सर सांगनाः ॥

(२०) ओम् अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्था वयवाश्च ये ॥

(२१) ओम् सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिंचन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये ॥

(२२) ओम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः

शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्माशान्तिः सर्वᳪशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि। ओम् शान्तिः। शान्तिः। शान्तिः। सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु।

अंगस्पर्श—

- यजमान अपने शरीर के अंगों का स्पर्श करे—निम्न मंत्र पढ़ता रहे—

ओम् शिरो में श्रीर्यशो मुखन्त्विषिः। केशाश्च श्मश्रूणि।
राजा मे प्राणो ऽ अमृतᳪसम्राट् चक्षुःविराट् श्रोत्रम्।
जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनोमन्यु स्वराड्भामः
मोदाः प्रमोदा अंगुलीरंगानि मित्रं मे सहः।
बाहू मे बलि मिन्द्रियᳪहस्तौ मे कर्मवीर्यम्। आक्तमा क्षत्र मुरो मम।
पृष्टीर्मे राष्ट्र मुदरम ᳪ सौग्रीवाश्च श्रोणी।
ऊरु अरत्क्नो जानुनी विशो में ऽ अंगानि सर्वतः।
नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मे ऽ पचतिर्भसत।
आनन्द नन्दा वाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः।
जंघाभ्यां पद्भ्यां धर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः॥

छायादान

- यजमान (बालक पिता) अपने सामने पृथिवी पर सप्त धान्य रखे,
- सप्तधान्य के ऊपर १ काँसे की कटोरी रखे,
- कटोरी में घी भर दे
- कटोरी की पंचोपचार पूजा कर दे : फिर उसमें बालक का मुख देखे,
- नाउन बालक को लेकर पिता के दाहिने कन्धे के ऊपर से बालक के मुख की परछाई घी में पिता को दिखाए, देख लेने पर फिर बाएँ कन्धे के ऊपर से परछांई दिखा दे, फिर सामने से प्रत्यक्ष मुख दिखा दे।

छाया मंत्र— ☐ छाया देखने का मंत्र निम्न है—

ओम् रूपेण वो रूपमभ्यागान् तु थो वो विश्व वेदा विभजतु।
ऋतस्य पथा प्रेतचन्द्र दक्षिणा विस्वः पश्य व्यन्तरिक्षं व्यत्तस्व सदस्यैः॥

कपूर आरती—

☐ आचमन-प्राणायाम कर कपूर की आरती करे;

☐ ब्राह्मण यजमान व पत्नी व बालक को रक्षासूत्र बाँध दे, तिलक लगा दे।

टिप्पणी— (१) लोकाचार में कटोरी में कड़ू तेल (सरसों का तेल) भर कर उसमें बालक का मुख देखते हैं। शास्त्रों में घी में देखने का प्राविधान है। लोकाचारानुसार करना चाहिए।

(२) कटोरी में पूजा के बाद कुछ द्रव्य छोड़ा जाता है, नाउन इसे अपना नेग मान कर लेती है तब बालक का मुख दिखाती है।

(३) छायादान की कटोरी घी या तेल तथा उसमें छोड़ा गया द्रव्य लोकाचार में नाऊन लेती है। पद्धति में ब्राह्मण को दान देने का प्रावधान है।

नामकरण

☐ एक पान पर लाल रोड़ी से कुशा के द्वारा बालक का राशिनाम लिख कर ब्राह्मण स्वयं अथवा बालक का पिता बालक के दाहिने कान में कहे :

ओम् तव पितामह नाम श्री.........
तव पितुः नाम श्री.............
तव राशि नाम................

(तुम्हारे पितामह का नाम अमुक है, तुम्हारे पिता का नाम अमुक है, तुम्हारा राशिनाम अमुक है। अमुक के जगह नाम लेना चाहिए।)

☐ इसके बाद—गोदान–पीठदान–भूयसी दक्षिणादान–ब्राह्मणभोजन–जापक दक्षिणा–आचार्य दक्षिणा–संकल्प–विसर्जन आदि "वेदी पूजन पद्धति" के अनुसार करे।

☐ ब्राह्मण—यजमान व उसकी पत्नी को मंत्राक्षत दे।
नाऊन गांठ खोल दे, बालक की माता आसन से उठकर आकाश में सूर्य को देखकर अक्षत छोड़कर हाथ जोड़ लें।

।। इति मूलशान्ति ।।

☐☐

भग...

जंघाभ्यां पद्भ्यां ध... सम विशि राजा ...